



ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15

कुल पृष्ठ-4

16 से 22 जुलाई, 2020

दयानन्दाब्द 197

सृष्टि सम्वत् 1960853121

सम्वत् 2077

आ. कृ.-01

कोरोना काल में वैदिक संस्कृति के प्रमुख स्तम्भों (3) यज्ञ, योग तथा आयुर्वेद को विश्व पटल पर आच्छादित करने के लिए सोशल तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यमों द्वारा करें भरसक प्रयास - स्वामी आर्यवेश



सम्माननीय सुधी पाठकों! गत अंकों में आपने वैदिक संस्कृति के मुख्य स्तम्भों यज्ञ, योग तथा आयुर्वेद में से यज्ञ तथा योग की महत्ता के बारे में संक्षिप्त विवरण पढ़ा। वैदिक संस्कृति में यज्ञ की भौतिक व आध्यात्मिक महत्ता असाधारण है। यज्ञ के द्वारा जो शक्तिशाली तत्त्व वायुमण्डल में फैलाये जाते हैं उनसे वातावरण शुद्ध होता है और विषैले जीवाणु नष्ट होते हैं। इसके अतिरिक्त यज्ञ करने से आत्मा पर चढ़े हुए मल-विक्षेप शुद्ध होते हैं। यज्ञ त्यागमय तथा परोपकारी जीवन का आदर्श प्रतीक है। परहित में किये गये समस्त कार्य यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। योग एक आध्यात्मिक उन्नति के साथ पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करने का दिव्य पथ है। इसका सम्बन्ध कुछ योगिक क्रियाओं के द्वारा शारीरिक उन्नति मात्र नहीं अपितु अष्टांग योग के माध्यम से जीवन को चरम लक्ष्य तक ले जाना है। बीमारियों, बुराईयों एवं तनाव आदि से मुक्त, स्वस्थ, सुखमय एवं शांतिमय जीवन जीना यह योग का एक पहलू है। योग की परिभाषा करते हुए योगदर्शन में कहा गया है कि योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने कहा है कि - योगः कर्मसु कौशलम्। अर्थात् विवेकपूर्ण कर्म ही योग है। इस प्रकार योग से तात्पर्य है कि जीवन में सात्विकता, आध्यात्मिकता एवं पवित्रता को अपनाकर परम

आनन्द की प्राप्ति की जा सकती है। जब योग साधना के द्वारा सेवा, पुरुषार्थ व परमार्थ तथा कर्मयोग से शरीर, इन्द्रियों, चित्त व चरित्र को शुद्ध किया जाता है तो वह योग कहलाता है। योग से मनुष्य का विचार, आहार व व्यवहार शुद्ध होता है। प्राचीन वैदिक संस्कृति का तीसरा स्तम्भ आयुर्वेद माना जाता है जो इस लेखमाला का अन्तिम विषय है। आयुर्वेद के सम्बन्ध में चर्चा प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम यह वाक्य उद्धृत करना प्रासंगिक होगा कि - शरीरमाद्यम् खलु धर्मसाधनम्। अर्थात् धर्म का मुख्य साधन शरीर है और शरीर का स्वस्थ होना नितान्त आवश्यक है। आयुर्वेद में शरीर को स्वस्थ रखने सम्बन्धी जो उपाय एवं समाधान दिये गये हैं वे वर्तमान समय में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं।

आज पूरी दुनिया कोरोना नामक महामारी से त्रस्त है और जूझ रही है। इस महामारी ने भारत सहित पूरे विश्व में लाखों लोगों को मृत्यु का ग्रास बना लिया है और बहुत बड़ी संख्या में लोग इस बीमारी से संक्रमित हैं। लेकिन जिस तेजी से यह बीमारी लोगों को बीमार कर रही है, भारत में उसी तेजी से लोग स्वस्थ भी हो रहे हैं। जबकि इसका अभी तक कोई प्रभावी इलाज या वैक्सीन सामने नहीं आई है। विश्व के लोग आश्चर्यचकित हैं कि भारत में इतनी शीघ्रता से कोरोना से संक्रमित लोग स्वस्थ कैसे हो रहे हैं। वैदिक संस्कृति में यज्ञ, योग और आयुर्वेद को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। हमारे ऋषि, मुनि अत्यन्त दूरदर्ष्ट थे। व्यक्ति को स्वस्थ रखने के लिए उन्होंने आयुर्वेद को घर-घर में पहुँचाने का कार्य किया तथा शरीर को अन्दर से पुष्ट बनाये रखने के लिए विशेष जड़ी-बूटियों और औषधियों को प्रत्येक परिवार की रसोई में पहुँचाने का कार्य किया। जिसका सेवन प्रत्येक भारतीय चिरकाल से करता आ रहा है। यह औषधियाँ मसालों के रूप में प्रत्येक परिवार में हमेशा उपलब्ध रहती हैं और व्यक्ति उनका सेवन करके अपनी रोग-प्रतिरोधक क्षमता

को बढ़ाता रहता है। हल्दी, काली मिर्च, इलायची, दालचीनी, जीरा, अजवायन, कढ़ीपत्ता आदि औषधियाँ हम अपने भोजन में प्रतिदिन सेवन करते हैं। यही कारण है कि भारतीयों की रोग-प्रतिरोधक शक्ति अन्य देशों के व्यक्तियों की तुलना में अधिक है और वो इस महामारी से संक्रमित होने के बाद भी आसानी से कम समय में स्वस्थ हो रहे हैं। विश्व के डॉक्टर इस महामारी से बचने के लिए रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना ही एक मात्र इलाज बता रहे हैं। यदि हमारा शरीर अन्दर से मजबूत है तो इस महामारी से बचा जा सकता है।

यज्ञ, योग और आयुर्वेद वैदिक संस्कृति द्वारा भारतीयों को दिया गया एक अनमोल उपहार है। यह स्वस्थ रहने के उन स्थाई उपायों में है जो हमारी पर्यावरण की भी देखभाल करते हैं। आयुर्वेद समग्र जीवन का विज्ञान है। अतः यह केवल शरीर पर ही ध्यान नहीं देता अपितु मन और आत्मा के स्तर पर भी विचार करता है। इसी कारण शरीर, मन और आत्मा यह तीन आयुर्वेद के पदार्थ हैं। व्यक्ति को वास्तविक स्वास्थ्य की उपलब्धि शरीर, मन और आत्मा के प्रसन्न रहने पर ही होती है। इसी कारण आयुर्वेद को शारीरिक सुख का साधन मानने के अतिरिक्त मोक्ष का भी साधन माना गया है। आयुर्वेद की समग्रता का दूसरा पक्ष है सामाजिक सामंजस्य का विचार। आयुर्वेद केवल व्यक्तिगत हित की ही बात नहीं करता अपितु सामूहिक हित भी इसमें स्वतः ही समाहित है। इसी आधार पर जीवन के दो विभाग किये गये। हित-अहित और सुख-दुःख। समाज के लिए जिसका जीवन श्रेयष्कर है वह हित और इसके विपरीत अहित कहलाता है। सुख और दुःख वैयक्तिक पक्ष के द्योतक हैं। स्वस्थ पुरुष का जीवन सुखी और रोगी का जीवन दुःखी होता है।

कोरोना महामारी एक वास्तविक और भयंकर त्रासदी के रूप में उभरी है। यह एक महाप्रकोप है जो हमारी आंखों के सामने घटित हो रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह बीमारी जल्द समाप्त होने वाली नहीं है। भले ही हमने अतीत में और वर्तमान में श्रेष्ठ जीवन जिया है और तमाम तरह की उन्नतियाँ हासिल की हैं, लेकिन एक बड़ा सत्य यह भी है कि कोरोना वायरस के सामने बड़े-बड़े वैज्ञानिक और डॉक्टर कुछ नहीं कर पा रहे हैं। हमारा विज्ञान और हमारी तकनीक भी असहाय सी हो गई है।

वैदिक संस्कृति में यज्ञ, योग और आयुर्वेद का ज्ञान और अनुभव आज के परिप्रेक्ष्य में उतना ही उपयोगी है जितना प्राचीन समय में था। यज्ञ, योग और आयुर्वेद हमारी आन्तरिक ऊर्जा को



शेष पृष्ठ 2 पर

सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य

वेदज्ञान से ही जीवन का कल्याण

— महात्मा चैतन्यमुनि

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुःखों का कारण माना गया है। इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है, उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं, क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है, ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतंजलि ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि 'वेदों की ओर लौटो।' वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है। अतः अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन व चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण को वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है, जो कालान्तर में लुप्त प्राय होती चली गई। मगर आर्य समाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेदस्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरूकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्य समाज संस्था की यह विशेषता है कि यह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती, बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रुचि पैदा की जाती है, बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते चले जा रहे हैं।

हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकतावाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है, जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है, उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देने वाले नहीं हैं। इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है, मगर मृगतृष्णा



रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बात की चेतावनी देते हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने का सामर्थ्य नहीं है, मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं, वह इस जीवनरूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है। अतृप्त है, रो भी रहा है, तड़प भी रहा है, मगर पुनः-पुनः भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है, मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है।

हम चिन्तन करें कि आखिर मानव-मानव के भीतर ये दूरियाँ क्यों बढ़ती चली जा रही है? होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है, तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं, ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते हैं, मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं। उस महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊँचाइयों को छूआ था, उस प्रक्रिया को नजरअंदाज करके उस महापुरुष की ही पूजा अर्चना शुरू कर दी जाती है। आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। गुरु होना, तो बुरी बात नहीं मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्तिपूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रन्थों और उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बाँट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्पज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतः सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे हैं। इसलिए अज्ञानता के गढ़ों में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है। तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है। अतः आज इस बातकी परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए, जो वेद के आधार पर ही हो सकती है। क्योंकि एकमात्र वेद पूर्णतः सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

— वैदिक वशिष्ठ आश्रम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि. प्र.)

पृष्ठ 1 का शेष

कोरोना काल में वैदिक संस्कृति के प्रमुख स्तम्भों यज्ञ, योग तथा आयुर्वेद को विश्व पटल पर.....

संतुलित करते हैं और रोगों से बचने, लड़ने की शक्ति देते हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। आत्मशोधन के बिना आत्म नियंत्रण सम्भव नहीं हो सकता। शाकाहार को अपनाने वाले एवं सात्विक जीवनशैली जीने वाले व्यक्ति इस कोरोना महामारी के प्रकोप से आसानी से बच निकले हैं। और सबसे विशेष बात यह है कि इस तरह की जीवनशैली मानवता में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करती। जो चाहे इसकी अनुठी शक्ति को आजमा सकते हैं। कोरोना से त्राण पाने के लिए वैक्सीन की अत्यधिक आवश्यकता है, लेकिन यदि हम अंग्रेजी दवाईयों के बिना ही सम्पूर्ण स्वस्थ रहना चाहते हैं तो संतुलित जीवन, संतुलित आहार-विहार, अच्छी आदतें, सकारात्मक सोच और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना होगा और यही आयुर्वेद है।

कोरोना वायरस का संक्रमण जिस तेजी से विश्व में फैल रहा है उसके हिसाब से वह दिन दूर नहीं जब पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति ढूँढ़ना भी मुश्किल हो जायेगा। लेकिन आयुर्वेद इस समस्या का पूर्ण समाधान करने में सक्षम है। आयुर्वेदप्रणीत जीवनशैली अपनाकर व्यक्ति रोगों से और कोरोना वायरस जैसे वायरसों से अपने आपको बचा सकता है। इसके लिए यज्ञ, योग और आयुर्वेद को अपनाना होगा। प्रतिदिन यज्ञ करना, यौगिक क्रियाएँ, यम-नियम का पालन और आयुर्वेदिक जीवनशैली को अपनाना होगा। उचित आहार-विहार, संतुलित दिनचर्या आदि का पालन करके रोगमुक्त रहा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को नित्य ब्रह्ममुहूर्त में उठना, योगाभ्यास

करना, यज्ञ करना तथा ऋतु अनुसार आहार ग्रहण करना एवं रात्रिचर्या का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। आहार ज्ञान, दिनचर्या सम्बन्धी ज्ञान, रात्रिचर्या का पालन करके, जीवन में यम-नियमों को अपनाकर हम स्वयं तो स्वस्थ होंगे ही तथा समाज को भी उन्नत कर पाने में सक्षम हो सकते हैं। आयुर्वेद में बताये गये आवला, गिलोय, तुलसी आदि जीवनीय, शक्तिदायक जड़ी-बूटियों का सेवन तथा प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाकर हम विभिन्न रोगों से बच सकते हैं। यज्ञ, योग और आयुर्वेद को अपनाने से व्यक्ति के शरीर की एक-एक कोशिका व पूरा शरीर तन्त्र पूरी तरह नियंत्रित व संतुलित हो जाता है और ऐसा करने वाला व्यक्ति शतायु तथा दीर्घायु होता है। छोटी-मोटी बीमारियों तथा विषैले वायरस से शरीर स्वयं ही मुकाबला कर लेता है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा हमारे ऋषियों द्वारा हजारों वर्ष पूर्व प्रणीत सरल, प्रामाणिक, सुरक्षित एवं वैज्ञानिक धरोहर है। हम अपने आपको, समाज को स्वस्थ रखकर अपनी संस्कृति का संरक्षण इस आयुर्वेदिक चिकित्सा के माध्यम से कर सकते हैं।

आयुर्वेद को अपनाने से जीवन में सम्यता, प्राकृतिकता एवं प्राचीन उच्च जीवन मूल्यों तथा महान आदर्शों के प्रति रुचि की भी अभिवृद्धि होगी। आवश्यकता इस बात की है कि हम जन-जन तक यज्ञ, योग और आयुर्वेद की महत्ता को, इसके लाभों को पहुँचाने का प्रयत्न करें। आज सारा विश्व हमारी इन उपलब्धियों को आश्चर्य से देख रहा है। विश्व समुदाय इसका महत्त्व समझ रहा है। आज अवसर

है कि विभिन्न माध्यमों से वैदिक संस्कृति के इन महत्त्वपूर्ण स्तम्भों को विश्व में प्रचारित किया जाये। आयुर्वेद देश की अर्थव्यवस्था को उन्नत करने में भी विशेष भूमिका निभा सकता है, क्योंकि आयुर्वेद की सभी औषधियाँ हमारे देश में अल्प मूल्य में मिल जाती हैं और इनको विदेशों में निर्यात करके पर्याप्त धन प्राप्त किया जा सकता है। विश्व में फैले इस कोरोना संकटकाल में आयुर्वेदिक औषधियों की माँग अत्यन्त बढ़ी है। आयुर्वेद व जड़ी-बूटियों पर आधारित चिकित्सा पद्धति को विस्तार देकर हम अपने देश को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को स्वस्थ तथा आर्थिक रूप से सुदृढ़ कर सकते हैं। जैसा हमने पहले भी बताया कि आयुर्वेद मूलतः एक वैज्ञानिक जीवन पद्धति है तथा व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति में भी सहयोग प्रदान करती है। यह सिर्फ धर्म से ही नहीं आत्मा से भी जोड़ती है, क्योंकि इसका उद्देश्य भी जीवन के उद्देश्य की भांति चार पुरुषार्थ — धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति ही है। तो आइये! पूरी निष्ठा, ईमानदारी तथा परिश्रम से हम अपने इन श्रेष्ठ सिद्धान्तों को भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रचारित तथा प्रसारित करने का संकल्प लें। इससे जहाँ हम कोरोना वायरस जैसी संक्रामक बीमारी से बचे रह सकते हैं और पर्यावरण को भी सुधारने में समर्थ हो सकते हैं। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार से ही देश तथा विश्व का कल्याण सम्भव है। जब सारे विश्व में यज्ञ, योग और आयुर्वेद के अनुसार जीवन जिया जायेगा तो उत्तम स्वास्थ्य के साथ-साथ विश्व बन्धुत्व, सह-अस्तित्व एवं एकत्व अपने आप स्थापित हो जायेगा।

23 जुलाई जयन्ती पर विशेष

जाज्वल्यमान नक्षत्र – चन्द्रशेखर आजाद

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था? काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है? युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम? 'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता? मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेटों की सजा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरुद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान् क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र-शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

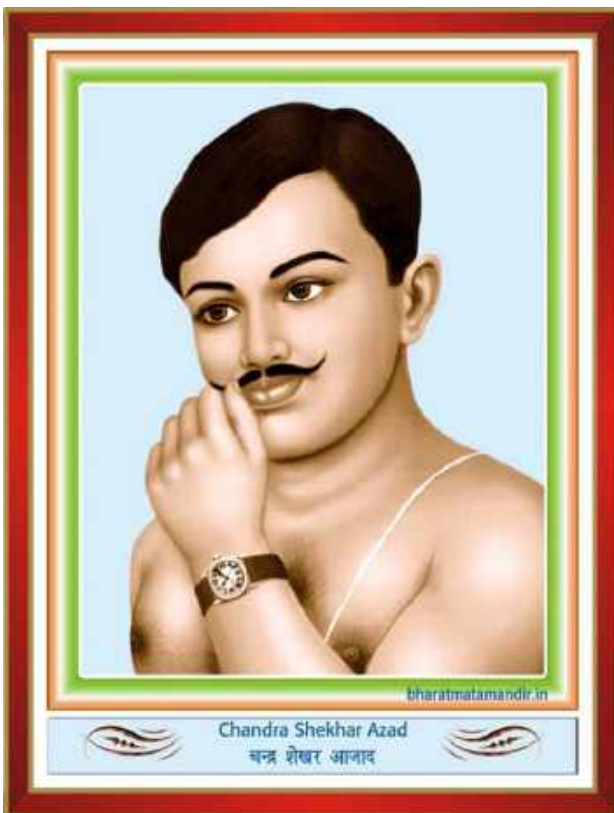
परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग-अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने-पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर-झाबुआ) में उनके माता-पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता-पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र-परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता-पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत-माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान् त्याग था, उस महान् कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खॉ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट-काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खॉ को फांसी की सजा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न-भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए



वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेर पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक

बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न-भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फँस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहाँ का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नाँट बाबर अपने दल-बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहाँ से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था धाँय-धाँय कर दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियाँ लग गईं। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहाँ की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान् वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

भूल-सुधार

गत अंक में पृष्ठ-4 पर एक अत्यन्त दुःखद समाचार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी के सुपुत्र श्री अभिषेक शर्मा जी के निधन का प्रकाशित हुआ था। भूलवश श्री अभिषेक शर्मा के स्थान पर श्री अश्विनी कुमार शर्मा प्रकाशित हो गया। कृपया उक्त समाचार में अश्विनी कुमार के स्थान पर श्री अभिषेक शर्मा पढ़ें। इस अक्षम्य भूल के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

– सम्पादक

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
“दयानन्द भवन” 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

कोरोना से बचाव के लिए क्या करें

कनपुर (ए.एन.बी.)। कोविड-19 का संक्रमण आज चिंता का विषय बन गया है। आम नागरिक इस संक्रमण से बचाव के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर जारी सुझावों, जानकारीयों और दिशानिर्देशों का पालन करके सुरक्षित रहने की कोशिश करता है। अधिकतर पड़े-छिड़े लोग इसके लिए पूरी सज्जता और सावधानी रखते हुए भी अपने आहार में इम्युनिटी बूस्टर खाद्य पदार्थों को शामिल करना चाहते हैं। जड़ी-बूटियों का सेवन करके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि के लिए यज्ञ साधन प्रयास करते हैं। हम अपने आहार में क्या बदलाव लाएं, क्या चीजें खाएं और क्यों खाएं तब तक स्वयं और परिवार को महसूस रख सकते। इस पर भीनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय भगवतवास घाट रोड कानपुर की मुख्य चिकित्सक रजनी पौरवाल ने जन उपयोगी जानकारी दी है जो विद्वान प्रस्तुत है।

दिनचर्या सुधारें

प्रातः सूर्योदय के समय या उसके पूर्व जाग जाएं किन्तु ध्यान रखें छह से आठ घंटे की गहरी नींद व सप्ताह रीति नंद नसनी है। सोने का विस्तर सफ़्त सुथरा हो, बिस्तर पर अन्य उपयोगी वस्तुएं पेन्, चाबियां, डायरी, फ़ोन, खरूर हुर चूने कर्न, पानने वाले गंदे कपड़े वसी अन्य चीजें नहीं होनी चाहिए। बिस्तर की चादर पर भूषण, डराकनी या हिसक त्रिदिग नहीं होने चाहिए। बर्दा करकट सोए। इस उपाय से घटती इम्युनिटी को सशक्त बनाने में मदद मिलती है।

इम्युनिटी बूस्टर नाश्ता

प्रातः नाश्ता में 10 से 20 दाने अंकुरित मूँगे, 20 ग्राम अंकुरित सोयाबीन, 25 से 30 ग्राम अंकुरित गेहूँ को खूब चबानेबाकर खाएँ। इसके तुरंत बाद लगे टमाटर का सूप 200 मिलीग्राम ले लें। इसमें रोग प्रतिरोधक शक्ति में तेज वृद्धि करने वाले अनेक उपयोगी तत्वों के साथ लाइकोपिन की भरपूर मात्रा होती है। फ़िल्लोय, अश्वगंधा और आंवला को खराब खराब मिश्रण कर चुर्चा बना लें। अंकुरित अनाज का नाश्ता करने के एक घंटे बाद एक चम्मच यह चूर्ण छोटी पौखल भिने गर्म दूध से लें। वह अत्यंत प्रभावशाली इम्युनिटी बूस्टर है।

योगासन से रहें दुरुस्त

प्रातः सौचविधि से निवृत्त होकर 10 से 15 मिनट योगासन करें। कुज्जल और जम्बेति अत्यंत लाभकारी हैं। रात में सोने से पूर्व गुग्गुलु या दोनो नमस्करनी, नाभि और अंशु की पलकों पर जरूर लगाएँ। आसन व प्राणायाम का अभ्यास सही ढंग से करें। गहन योगाभ्यास से अनेक प्रकार की समस्याएं और रोग होने का खतरा रहता है।

रक्षा प्रणाली को दें बल

सामकाल चाय के स्थान पर फल, खजे फलों का रस, गुग्गुलु दूध आदि ले सकते हैं। दही, मट्ठा, काफ़ी, कोल्ड ड्रिंक, शर्बत आदि से बचाव करें। काली मिर्च, लवंग, केली के फूल और ताजी जिलेय का काढ़ा संक्रमक रोग से बचाव का बहुत प्रभावशाली उपाय है। नुस्काम व गले में खराब होने पर तब पर भूनकर पाउडर बनाया गया मुहुगुह अथवा ग्राम, 5 ग्राम अदरक का रस और तीन ग्राम तुलसी पत्ती का रस दिन में बार-बार लें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्वाकांक्षी योजना



घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी



चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र

3 100 / - में

एक वेद सैट मात्र 3 100 / - रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठाएँ। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 'चैक/बैंक ड्राफ्ट' द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3 / 5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 • दूरभाष :- 011-23 274771

प्रो० विहलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विहलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।